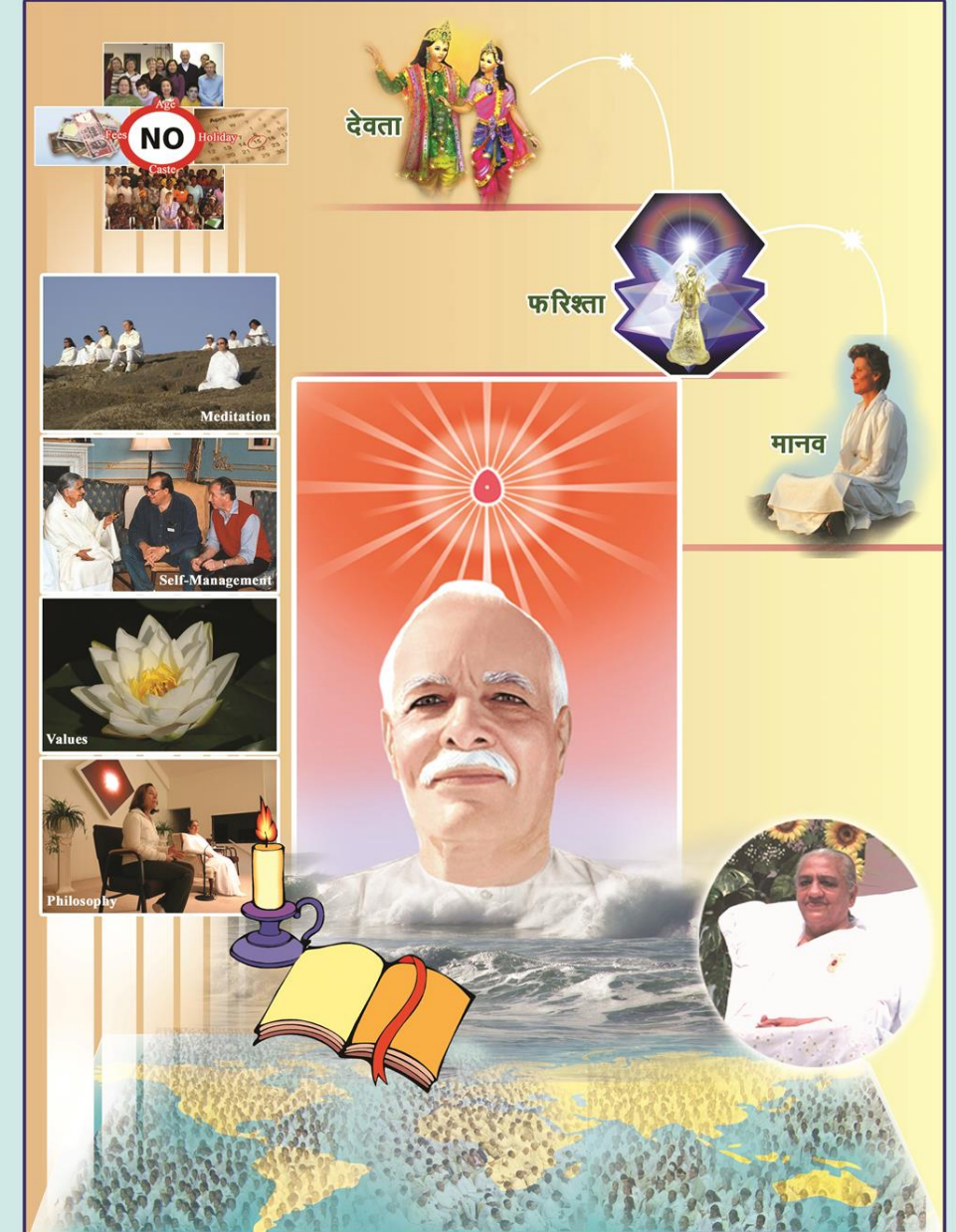


Self Respect

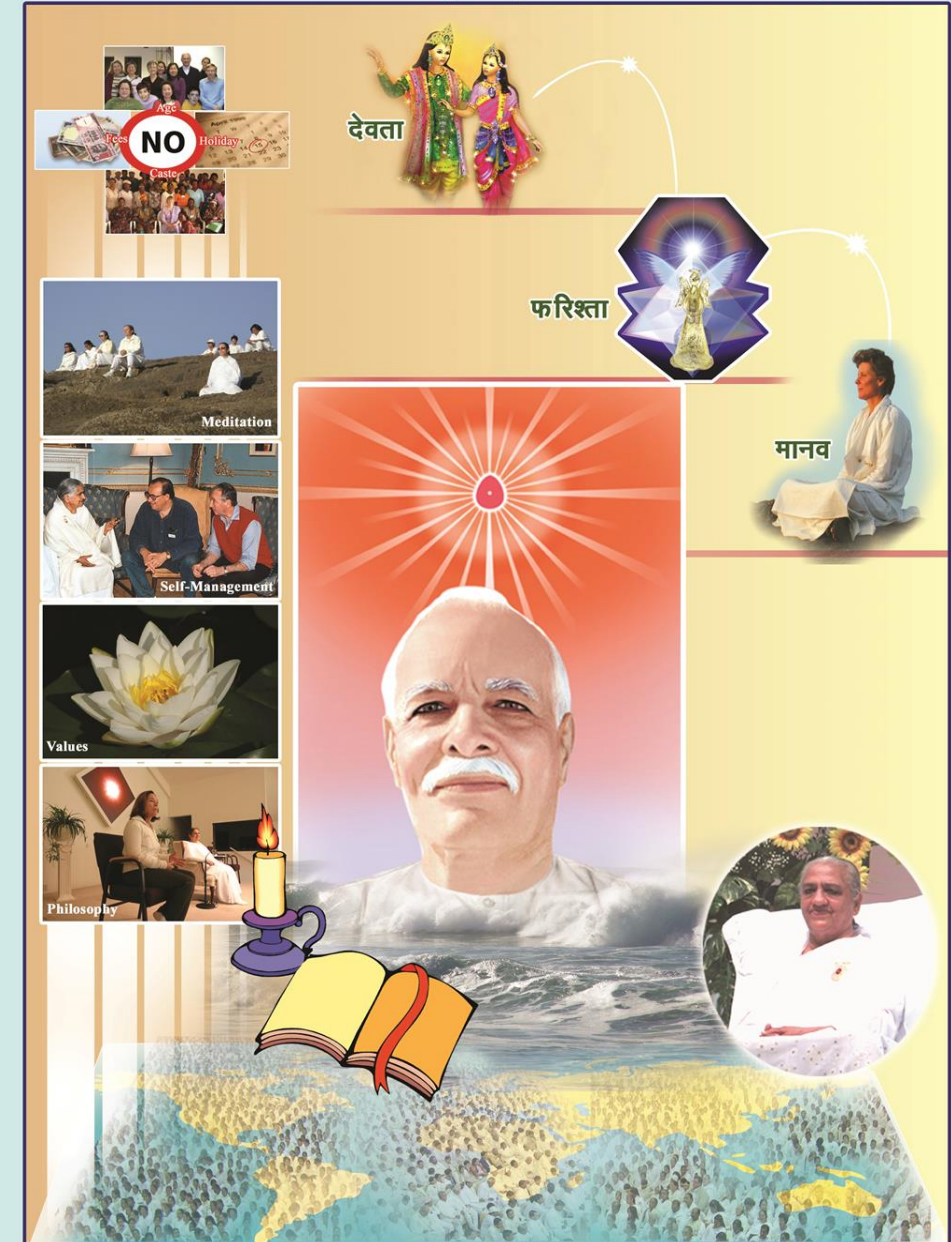
22-07-2014

सर्वोच्च शिक्षक (Supreme Teacher)



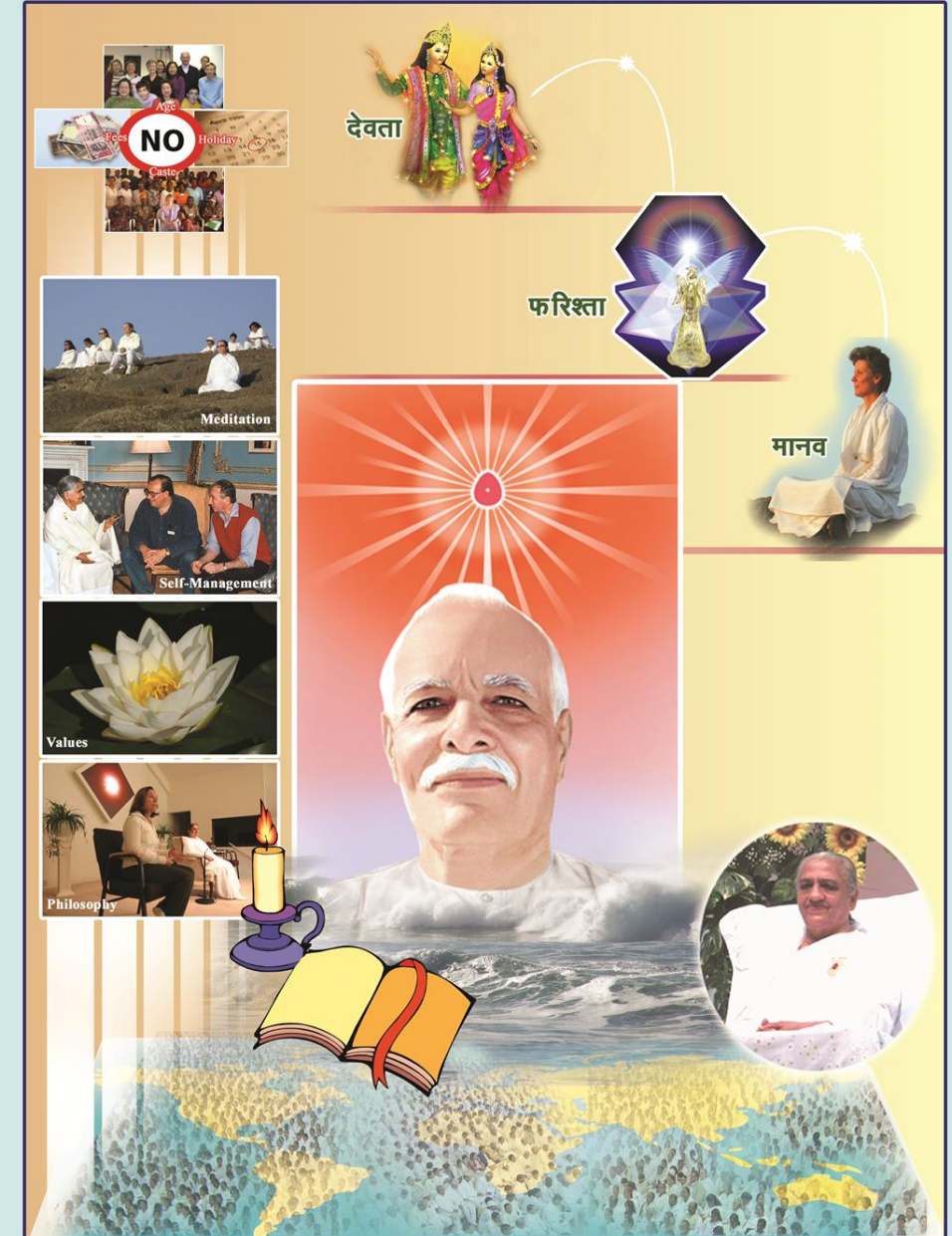
सर्वोच्च शिक्षक परमात्मा शिव ने साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा के द्वारा 1969 तक एवं तत्पश्चात् दादी हृदयमोहिनी जी द्वारा मनुष्य से सो फरिस्ता सो देवता बनाने के लिए शिक्षा देते आ रहे हैं ।
ये सर्वोत्तम शिक्षा जाति, धर्म, वर्ण से परे सम्पूर्ण विश्व में निःशुल्क रूप से दिया जा रहा है ।

- ✓ आत्म- अभिमानी हो बैठना है । बाप बच्चों को समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझो । अब बाबा आलराउण्डर से पूछते हैं सतयुग में आत्म- अभिमानी होते हैं या देह- अभिमानी? वहाँ तो ऑटोमेंटिकली आत्म- अभिमानी रहते हैं, घड़ी-घड़ी याद करने की दरकार नहीं रहती ।
- ✓ बाबा ने बहुत अच्छी रीति समझाया है-इस समय यह कलियुगी पतित दुनिया है जिसमें महान् अपरमअपार दुःख हैं । अब हम मनुष्यों को सतयुगी पावन महान् सुखधाम में ले जाने की सर्विस कर रहे हैं वा रास्ता बताते हैं ।



सर्वोच्च शिक्षक (Supreme Teacher)

✓ तुम्हें सभी मनुष्यों को ज्ञान की भू- भू कर आपसमान ज्ञानवान बनाना है । जिससे परिस्तानी निर्विकारी देवता बन जायें । ऊंच ते ऊंच पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनाना । गायन भी है ना मनुष्य को देवता किये. किसने किया? देवताओं ने नहीं किया । भगवान् ही मनुष्यों को देवता बनाते हैं । मनुष्य इन बातों को जानते नहीं ।



सर्वोच्च शिक्षक परमात्मा शिव ने साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा के द्वारा 1969 तक एवं तत्पश्चात् दादी हृदयमोहिनी जी द्वारा मनुष्य से सो फरिस्ता सो देवता बनाने के लिए शिक्षा देते आ रहे हैं ।
ये सर्वोत्तम शिक्षा जाति, धर्म, वर्ण से परे सम्पूर्ण विश्व में निःशुल्क रूप से दिया जा रहा है ।

✓ अब तुम बच्चे सारे विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो ।

✓ खूब पुरुषार्थ कर अपनी जाँच करनी है-कहाँ हमारी आँखें धोखा तो नहीं देती हैं? विश्व का मालिक बनना बड़ी ऊँच मंजिल है । चढ़े तो चाखे..... अर्थात् राजाओं का राजा बनते, गिरे तो प्रजा में चले जायेंगे । आजकल तो कहेंगे विकारी जमाना है । भल कितने बड़े आदमी हैं, समझो कवीन है उनके अन्दर भी डर रहता होगा कि कहाँ कोई हमें उड़ा न दे ।

सर्वोच्च शिक्षक (Supreme Teacher)

देवता

फरिश्ता

मानव

Meditation

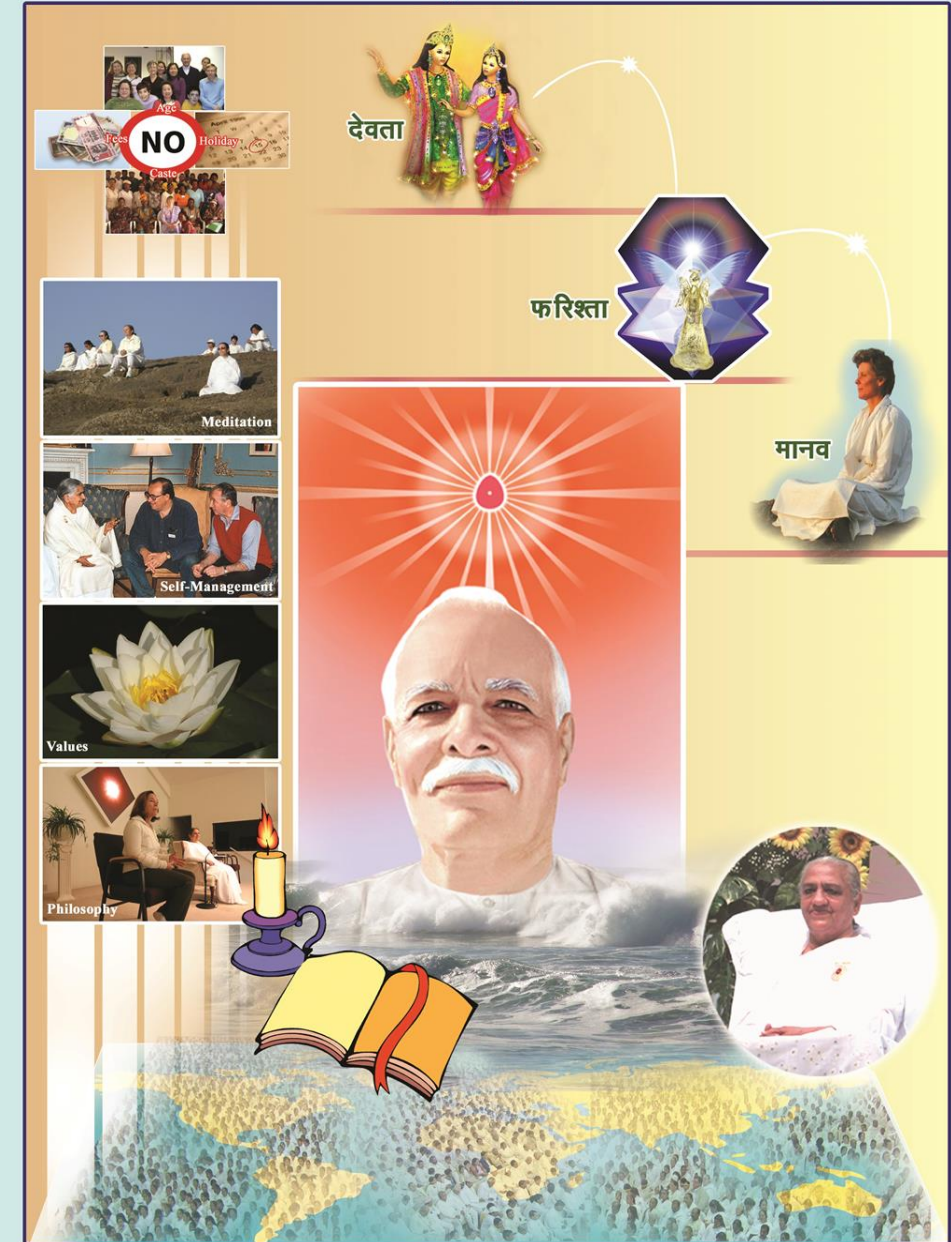
Self-Management

Values

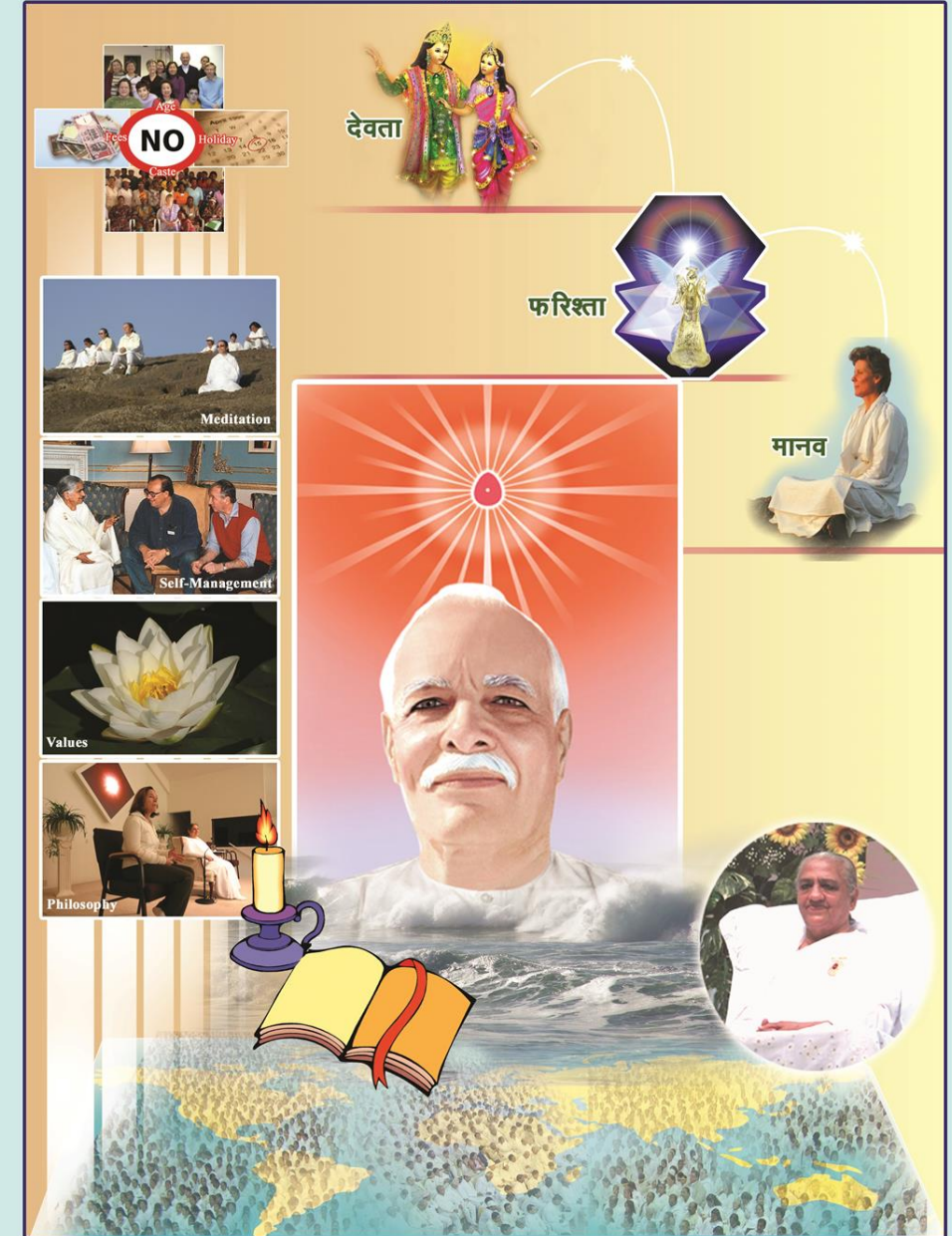
Philosophy

सर्वोच्च शिक्षक परमात्मा शिव ने साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा के द्वारा 1969 तक एवं तत्पश्चात् दादी हृदयमोहिनी जी द्वारा मनुष्य से सो फरिश्ता सो देवता बनाने के लिए शिक्षा देते आ रहे हैं ।
ये सर्वोत्तम शिक्षा जाति, धर्म, वर्ण से परे सम्पूर्ण विश्व में निःशुल्क रूप से दिया जा रहा है ।

- ✓ बस, यह पुराना शरीर छोड़कर हमको जाना है फिर जब शरीर लेंगे तो स्वर्ग में अपना पार्ट बजायेंगे ।
- ✓ बाकी आत्मा की बुद्धि ऐसी वर्थ नाट ए पेनी हो जाती है । अब बाप कितना बुद्धिवान बनाते हैं ।
- ✓ जो सुखधाम में था वह फिर होगा । वहाँ कोई रोग-दुख की बात नहीं । यहाँ तो अपरम्पार दुःख है । वहाँ अपरम्पार सुख हैं । अभी हम यह स्थापन कर रहे हैं

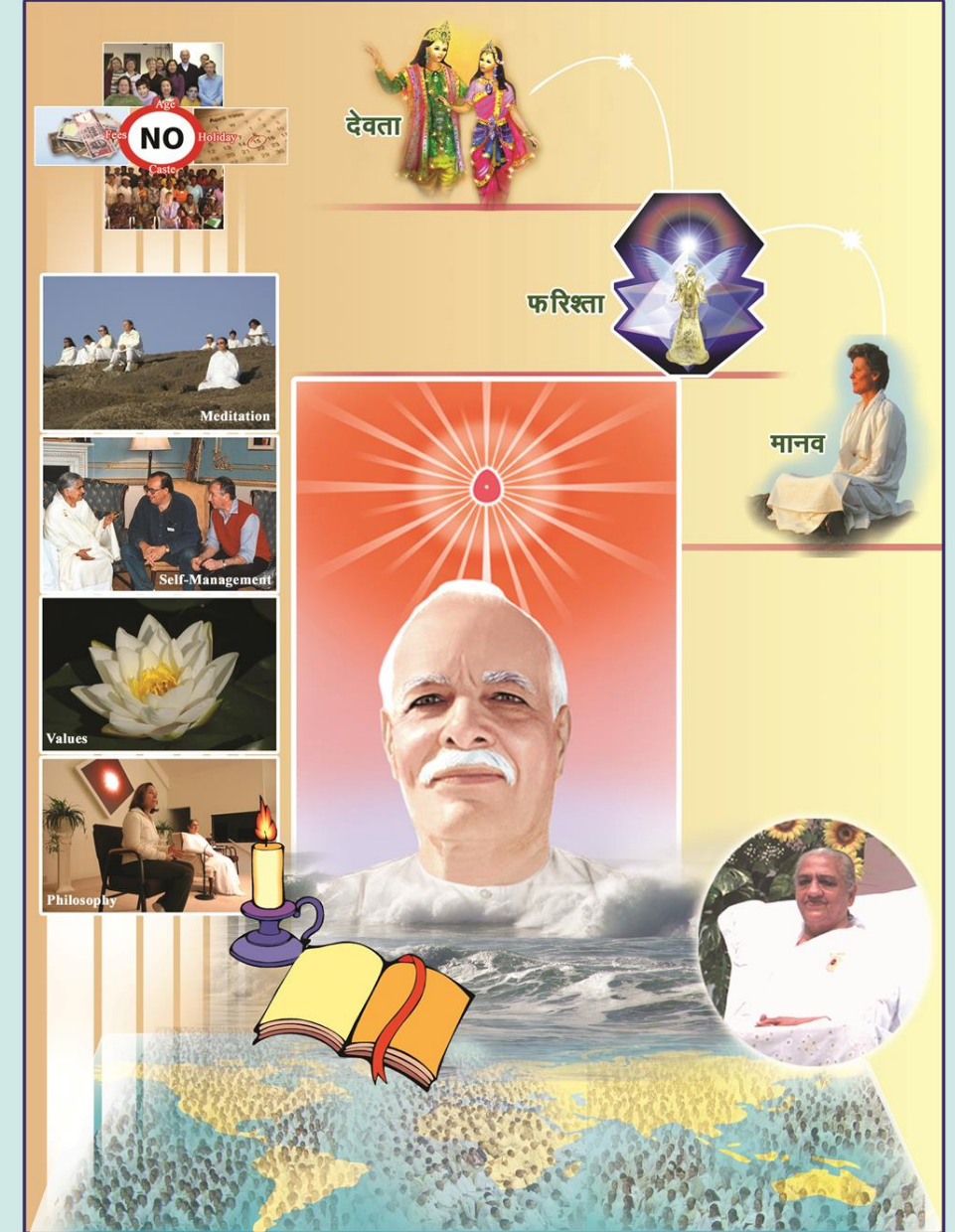


- ✓ तुम बाप की याद में विषय सागर से क्षीरसागर में चले जाते हो ।
- ✓ अभी है संगमयुग । बाप भी संगम पर ही आते हैं । अभी तुम जानते हो 5 हजार वर्ष में हम क्या-क्या जन्म लेते हैं । कैसे सुख से फिर दुःख में आते हैं । जिनको सारा ज्ञान बुद्धि में है, धारणा है वह समझ सकते हैं । बाप तुम बच्चों की झोली भरते हैं ।
- ✓ वरदान: विशेषता के संस्कारों को नेचुरल नेचर बनाए साधारणता को समाप्त करने वाले मरजीवा भव !



सर्वोच्च शिक्षक (Supreme Teacher)

✓ अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बापदादा व मात-पिता का दिल व जान, सिक व प्रेम से याद-प्यार और गुडमार्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।



सर्वोच्च शिक्षक परमात्मा शिव ने साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा के द्वारा 1969 तक एवं तत्पश्चात् दादी हृदयमोहिनी जी द्वारा

मनुष्य से सो फरिस्ता सो देवता बनाने के लिए शिक्षा देते आ रहे हैं ।

ये सर्वोत्तम शिक्षा जाति, धर्म, वर्ण से परे सम्पूर्ण विश्व में निःशुल्क रूप से दिया जा रहा है ।